अब प्रश्न था मैट्रिक की पढाई का। बाहर जाकर पढ़ने के लिए साधन नहीं थे। नाना पाठक परिवार के साथ रहते थे। पाठक परिवार भी मध्यम वर्गीय था। उसी परिवार के आबाजी और नानाजी ने एक योजना बनायी।
आबा, हम शहर से फल, सब्जी और घरेलू सामान खरीद कर अधिक भाव पर सम्पन्न परिवारों को बेच सकते हैं।
हां, और आगे की पढाई के लिए धन एकत्र कर सकते हैं, चाहे जितना समय लग जाए।